सिल्वेस्टर और जादुई पत्थर

विलियम स्टीग, हिंदी: विदूषक

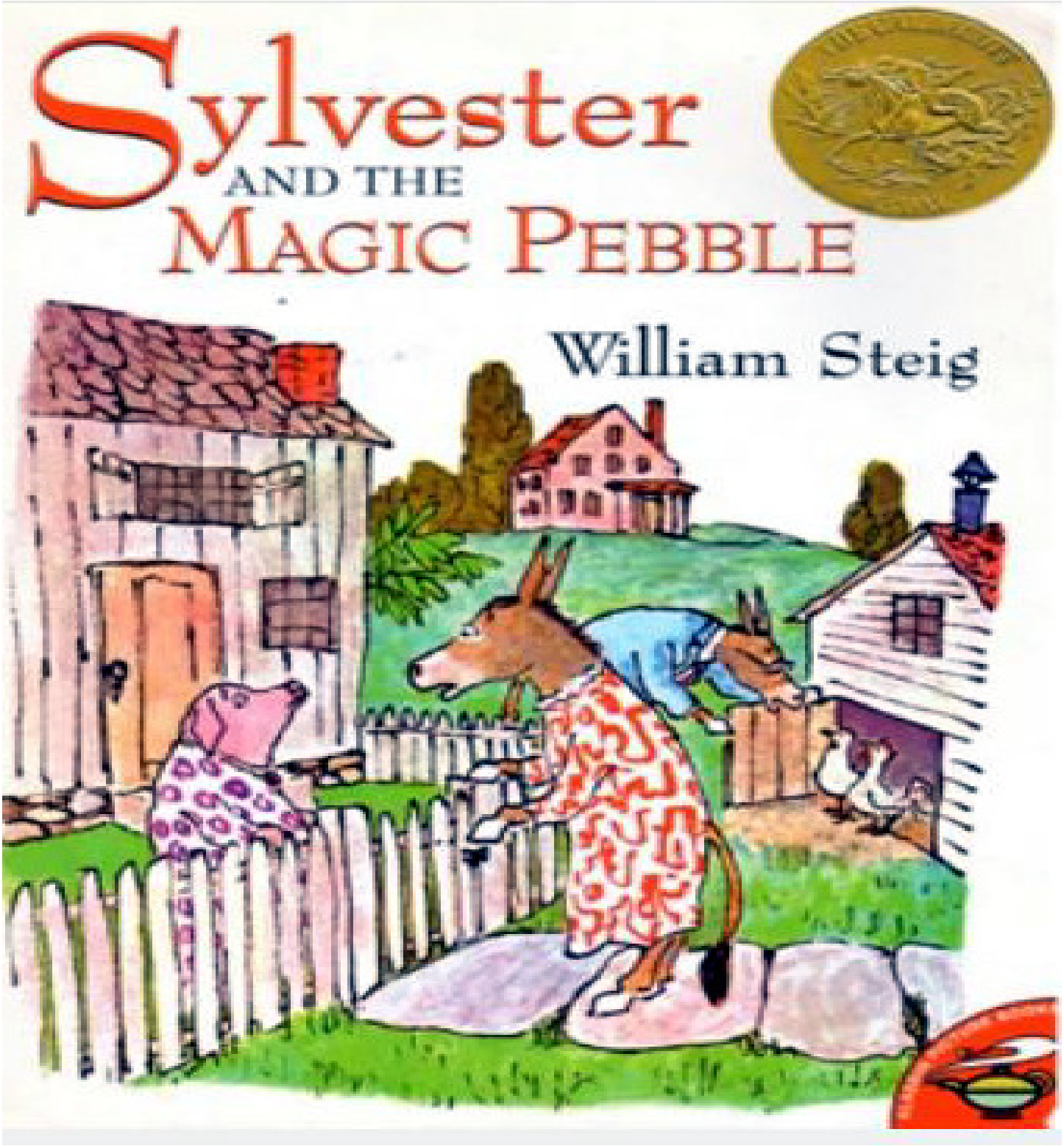

सिल्वेस्टर डंकन अपने माता-पिता के साथ एकोर्न रोड पर रहता था. उसका एक शौक था – वो अजीबो-गरीब आकर और रंगों के पत्थर इकट्ठे करता था.

बारिश के एक शनिवार वाले दिन उसे एक अनूठा पत्थर मिला. पत्थर चमकीला था और उसका रंग, लाल-सुर्ख था. पत्थर एकदम गोल कंचे जैसा था. इस अनूठे पत्थर को निहारते हुए सिल्वेस्टर एकदम कांपने लगा. शायद वो पत्थर पाकर बहुत उत्तेजित था. तभी तेज़ बारिश उसकी पीठ पर पड़ने लगी. “काश, यह बारिश रुक जाती,” उसने कहा.

बारिश तुरंत बंद हो गयी, यह देख, सिल्वेस्टर को बड़ा आश्चर्य हुआ. अक्सर बारिश धीरे-धीरे करके बंद होती है. पर अभी ऐसे कुछ नहीं हुआ. बारिश तुरंत रुक गई. हवा में जो पानी की बूंदे लटकी थीं वो अचानक गायब हो गयीं. सब चीज़ें सूख गयीं, और सूरज तेज़ी से चमकने लगा. ऐसा लगा जैसे कभी बारिश हुई ही न हो.

ज़िन्दगी में सिल्वेस्टर की कोई इच्छा इतनी जल्दी कभी पूरी नहीं हुई थी. कहीं कोई जादू तो नहीं हुआ? उसने सोचा. सिल्वेस्टर का शक लाल पत्थर पर गया. वो पत्थर कहीं जादुई तो नहीं था? (सच में वो पत्थर जादुई था). पत्थर को दुबारा परखने के लिए सिल्वेस्टर ने उसे ज़मीन पर रखा और कहा, “काश, दुबारा बारिश शुरू होती.”

पर कुछ भी नहीं हुआ. पर जब उसने अपने पंजों में पत्थर पकड़कर वही शब्द दोहराए, तो तुरंत आसमान काला हो गया, बिजली कड़कने लगी और धुआंधार बारिश होने लगी.

“आज का दिन मेरे लिए कितना भाग्यशाली है!” सिल्वेस्टर ने सोचा. “अब से मेरी जो इच्छा होगी, वो मुझे मिल जायेगा. मेरे माता-पिता भी जो, चाहें वो पा सकते हैं. मेरे रिश्तेदार, दोस्त और कोई अन्य लोग भी, जो चाहें वो पा सकते हैं!”

फिर उसने पत्थर पकड़कर दुबारा से धूप की मांग की. इस प्रयोग के बाद उसने फरमाइश की, कि उसके बाएं टखने का मस्सा गायब हो जाए, और वो तुरंत छूमंतर हो गया. फिर सिल्वेस्टर घर की ओर चला. वो जल्दी-से-जल्दी अपने माता-पिता को, जादुई पत्थर दिखाने का इच्छुक था. शायद वो पहले, उसकी बात पर यकीन ही न करें.

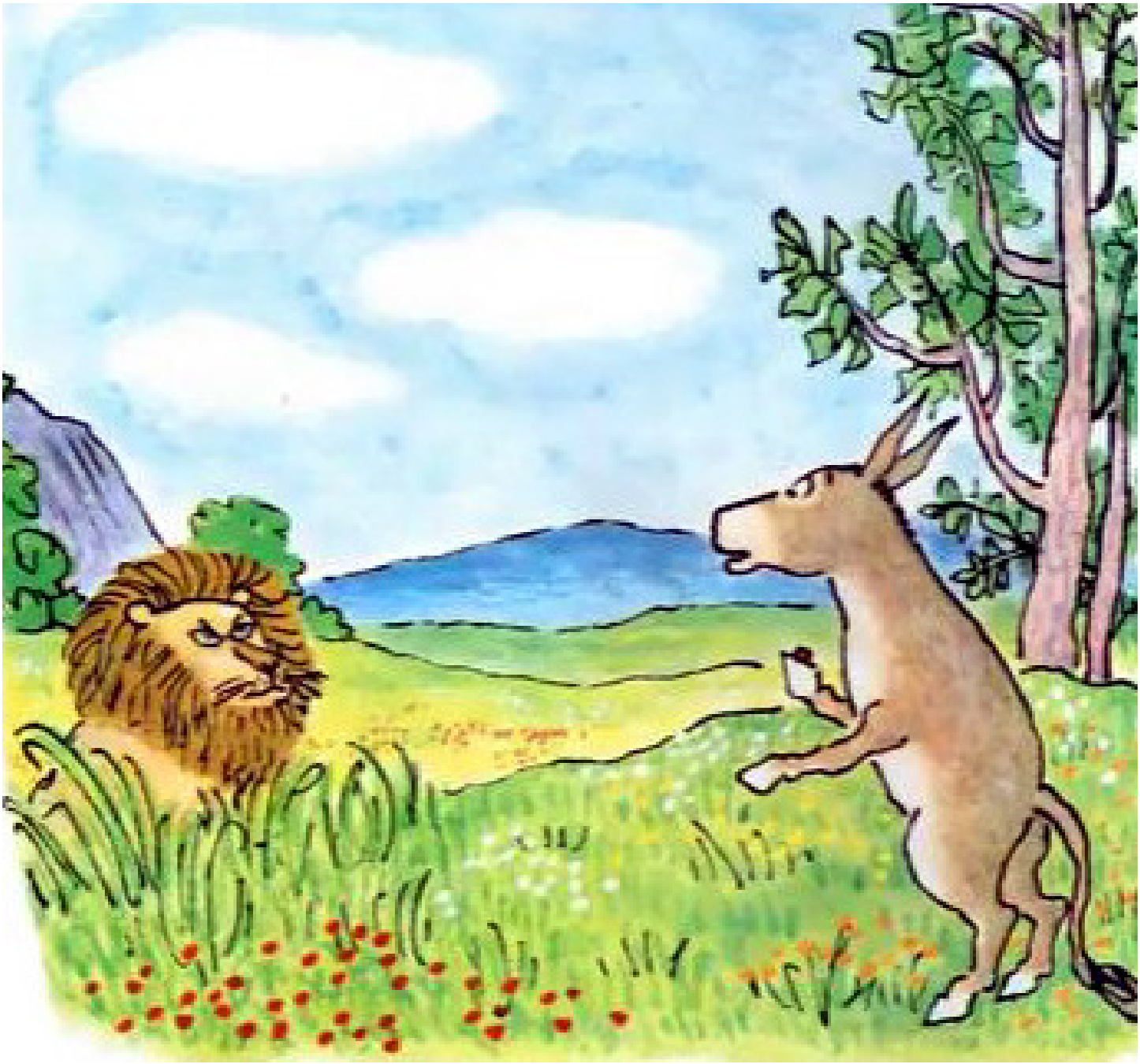

सिल्वेस्टर, स्ट्रॉबेरी हिल पार कर रहा था. वो उन तमाम चीज़ों के बारे में सोच रहा था जो वो उस जादुई पत्थर से प्राप्त कर सकता था.
पर अचानक सिल्वेस्टर चौंका! लम्बी घास में से एक भूखा शेर उसके सामने खड़ा था और उसे घूर रहा था. सिल्वेस्टर डर से कांपने लगा.
अगर सिल्वेस्टर इतना सहमा न होता तो वो पत्थर से बहुत कुछ मांग सकता था – कि शेर वहां से गायब हो जाये, या फिर सिल्वेस्टर अपने घर में माँ-बाप के साथ में सुरक्षित हो.

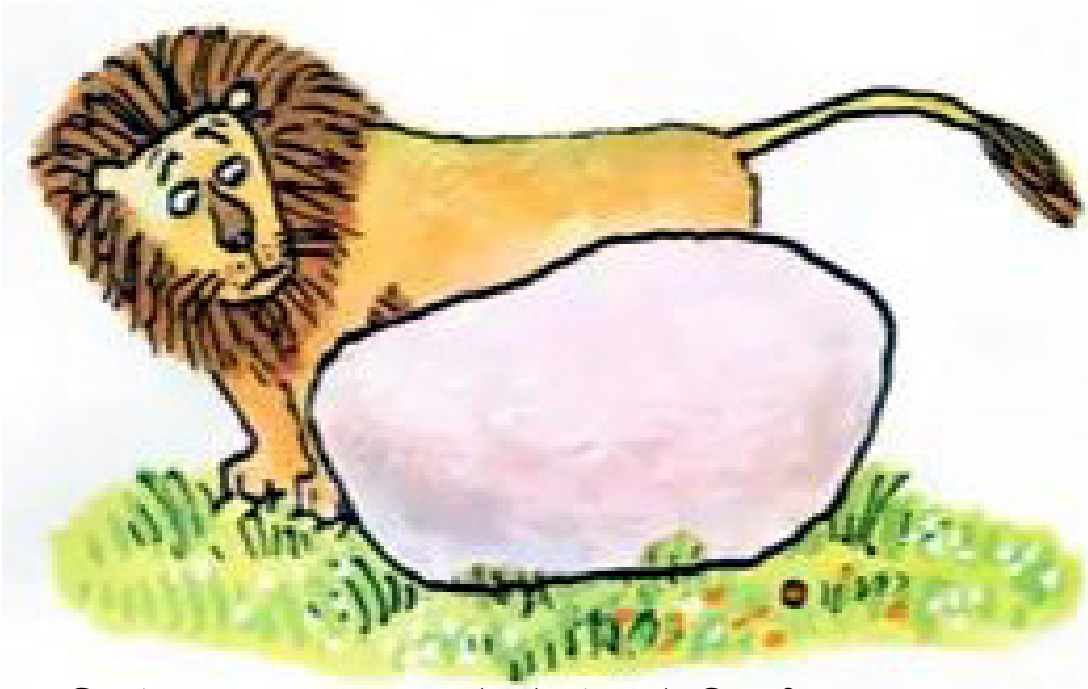

सिल्वेस्टर अगर चाहता तो वो शेर को तितली, फूल या मच्छर में बदल सकता था. सिल्वेस्टर बहुत कुछ कर सकता था. पर शेर को देखकर वो बहुत घबरा गया था और ठीक से सोच नहीं पाया था.

“काश मैं एक चट्टान होता,” उसने कहा.

और तुरंत सिल्वेस्टर एक बड़ी चट्टान में बदल गया.

शेर उसकी तरफ दौड़ा हुआ आया. उसने चट्टान को कई बार सूंघा, उसके चारों ओर कई चक्कर लगाये. पर अंत में वो परेशान होकर, झक मारकर, वहां से चला गया. “मैंने अभी-अभी तो उस छोटे गधे को वहां देखा था, और अभी वो मेरी आँखों के सामने से ओंझल हो गया. मैं कहीं सठिया तो नहीं हो गया हूँ?” उसने खुद से कहा.

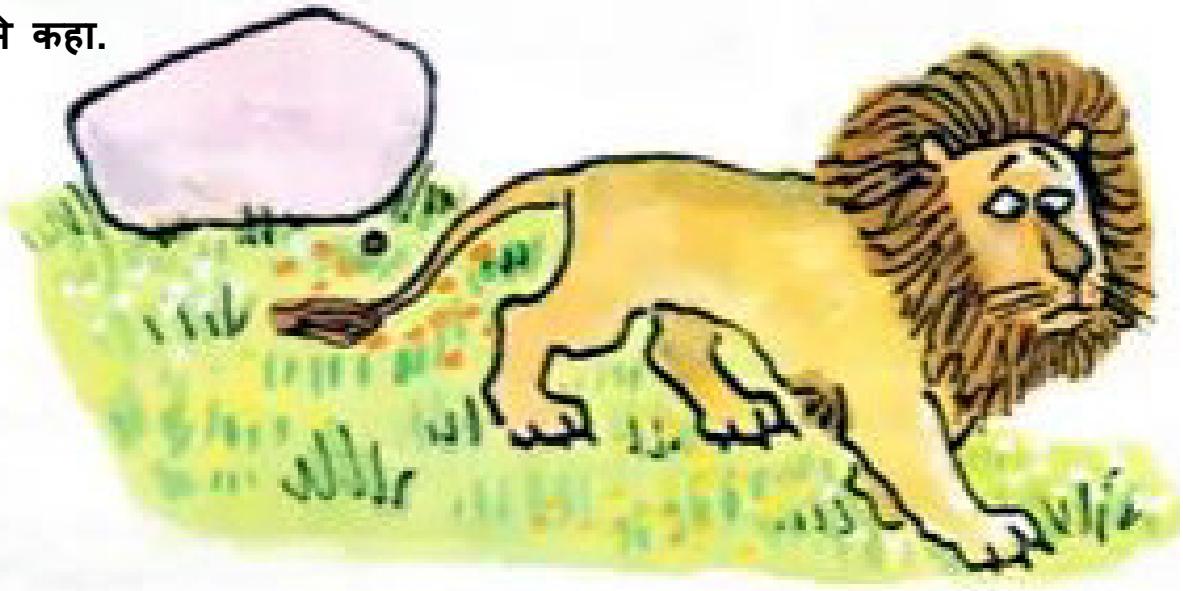

अब सिल्वेस्टर, स्ट्रॉबेरी हिल पर एक चट्टान बन गया. उसके पास ही ज़मीन पर लाल जादुई पत्थर पड़ा था. पर सिल्वेस्टर अब उस लाल पत्थर को उठा नहीं सकता था. “काश मैं पहले जैसे छोटा गधा बन जाता,” सिल्वेस्टर ने सोचा.

पर उसके सोचने से कुछ हुआ नहीं. जादू होने के लिए लाल पत्थर उसके पास होना ज़रूरी था. सिल्वेस्टर के लिए अब जादू करना, संभव नहीं था.

सिल्वेस्टर बहुत तेज़ी से सोच-विचार करने लगा. वो अब परेशान था और उसे डर भी लग रहा था. पर अपनी लाचारी में उसे अब कोई और उम्मीद नज़र नहीं आई.

उसने सभी संभावनाओं पर विचार किया. मुक्ति का बस अब एक ही रास्ता बचा था. कोई उस लाल जादुई पत्थर को उठाए और फिर इच्छा प्रकट करे कि उनके सामने की चट्टान एक गधे में तब्दील हो जाये. क्यूंकि वो पत्थर लाल-सुर्ख और चमकीला था, इसलिए कभी कोई उसे उठाएगा, इसकी सम्भावना काफी थी.
पर कोई सामने की चट्टान को गधे में बदलने की इच्छा प्रगट करे, इसकी सम्भावना बहुत कम थी. उसका चांस करोड़ों में एक था.
फिर सिल्वेस्टर सो गया. बिचारा और करता भी क्या? फिर तारों भरी रात आई.

सुबह सिल्वेस्टर के माता-पिता ने, पड़ोसियों से अपने बेटे के बारे में पूछताछ की.

उन्होंने पड़ोस के सारे बच्चों – कुत्तों के पिल्लों, बिल्ली के बच्चों, घोड़ों के बच्चों और सूअर के बच्चों से पूछा. पर पिछले दो दिनों में, किसी ने भी सिल्वेस्टर को नहीं देखा था.

हार कर वो पुलिस के पास गए. पुलिस भी उनके बेटे सिल्वेस्टर को खोज नहीं पाई.

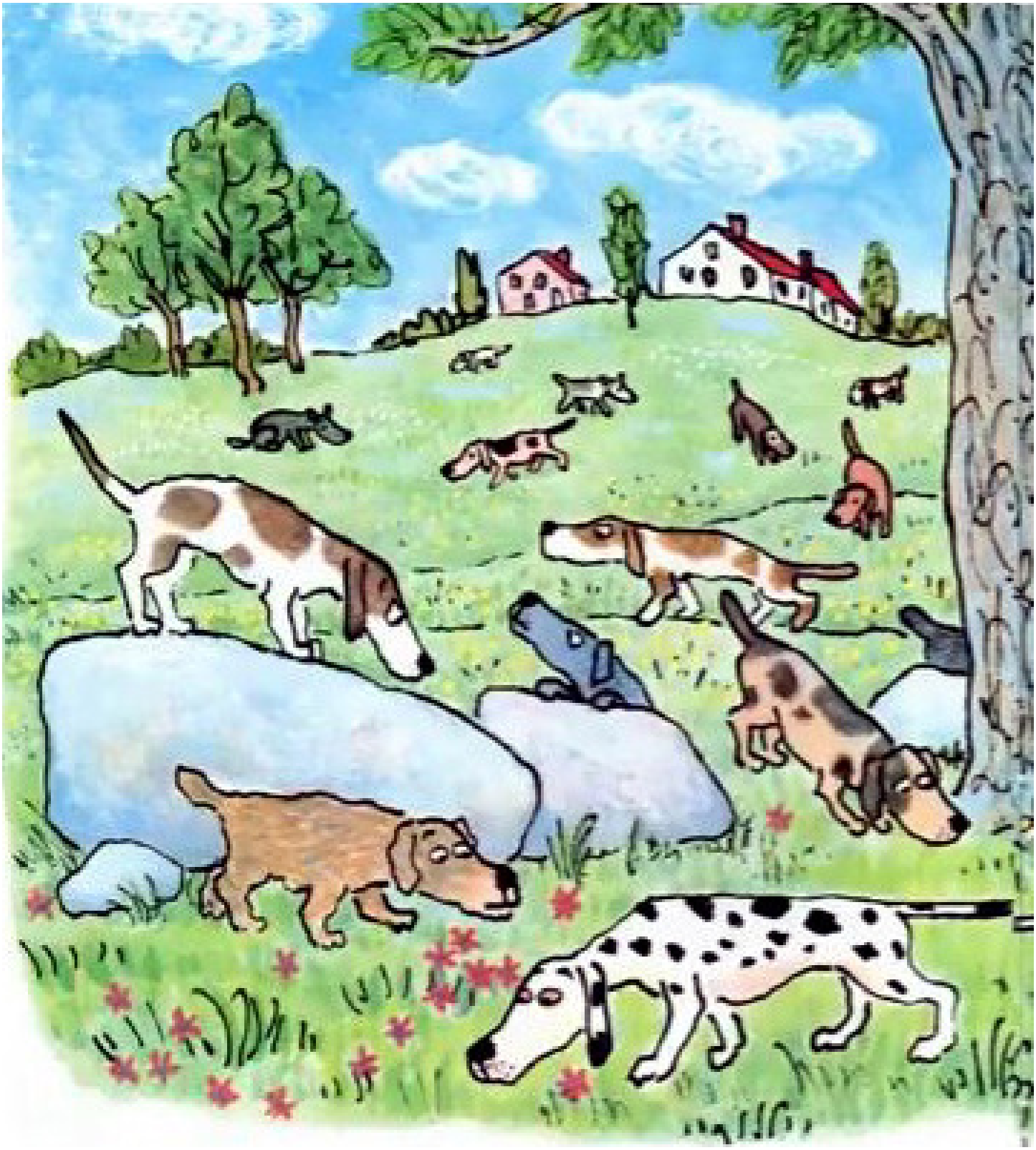

फिर मोहल्ले के सभी कुत्ते, सिल्वेस्टर को खोजने निकले. उन्होंने सभी पत्थरों, चट्टानों, पेड़ों और घास के हरेक तिनके को सूंघ-सूंघ कर देखा.

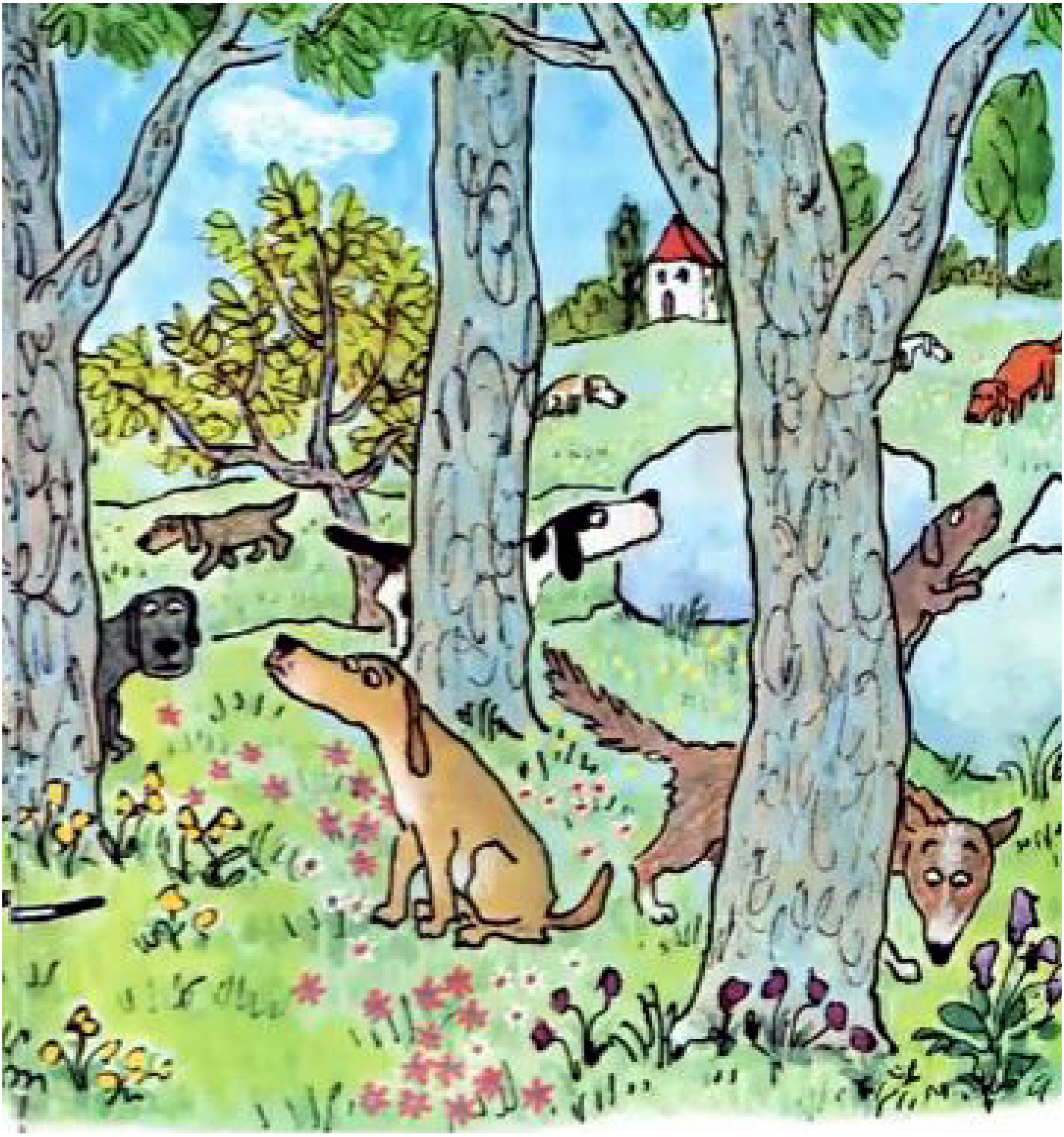

उन्होंने हर गली-कूचे का चप्पा-चप्पा छान मारा. पर उन्हें सिल्वेस्टर कहीं नहीं मिला. फिर कुत्ते स्ट्रॉबेरी हिल गए. वहां के पत्थरों और चट्टानों को भी उन्होंने सूंघा. पर उन सभी में उन्हें सिर्फ पत्थरों की ही गंध आई. दूर-दूर तक कहीं भी सिल्वेस्टर की खुशबू नहीं मिली.

महीने भर तक सिल्वेस्टर के माता-पिता जानी-मानी गलियों में उसे खोजते रहे, और बार-बार अपने परिचित जानवरों से, उसके बारे में पूछते रहे. अंत में मिस्टर और मिसेज़ डंकन को कुछ समझ में नहीं आया. वो आगे क्या करें? उन्हें लगा कि उनका पुत्र सिल्वेस्टर किसी भयानक हादसे का शिकार हुआ होगा, और शायद इस जनम में वो उससे दुबारा फिर कभी नहीं मिल पाएंगे. (इस पूरे दौर में सिल्वेस्टर, अपने माता-पिता से सिर्फ एक किलोमीटर की दूरी पर था.)

सिल्वेस्टर के माता-पिता ने खुद को खुश रखने की बहुत कोशिश की. व्यस्त रहने के लिए वो अपने नियमित कामकाज लगातार करते रहे. पर उनकी दिनचर्या में अपने बेटे सिल्वेस्टर के साथ, कुछ समय बिताना भी शामिल था. इसलिए बेटे की याद उन्हें लगातार परेशान करती रही. बाद वे बहुत दुखी और परेशान हुए. उनका जीवन निरर्थक हो गया था.

रात के बाद दिन आता और उसके बाद फिर रात. यह क्रम लगातार चलता रहता. पहाड़ी पर पड़ा सिल्वेस्टर अब बहुत कम ही उठता था. क्यूंकि जगते समय वो हमेशा उदास और दुखी रहता इसलिए वो ज्यातर समय बस सोता ही रहता था.

उसे लगा अब वो ज़िन्दगी भर एक चट्टान ही बना रहेगा, इसलिए वो खुद को उसके लिए अभ्यस्त करने लगा. फिर वो बहुत देर तक, लम्बा सोता रहता. धीरे-धीरे सर्दी बढ़ने लगी. उसके बाद पतझड़ आया और पत्तों ने अपना रंग बदला. अंत में सूख कर पेड़ों के पत्ते झड़े और घास पूरी तरह से ज़मीन पर लेट गई.

फिर कड़ाके की ठण्ड पड़ी. इधर-उधर तेज़ हवाओं के बवंडर उड़ने लगे. फिर बर्फ गिरने लगी. उस मौसम में जानवर भी, घर पर ही रहते और बहुत कम ही बाहर निकलते. उन्होंने जो भोजन इकट्ठा किया था, वो उसी पर जिंदा रहते.

एक दिन एक भेड़िया, सिल्वेस्टर वाली चट्टान पर आकर बैठा. उसे बहुत भूख लगी थी इसलिए वो बहुत देर तक हूँकता और चिल्लाता रहा.

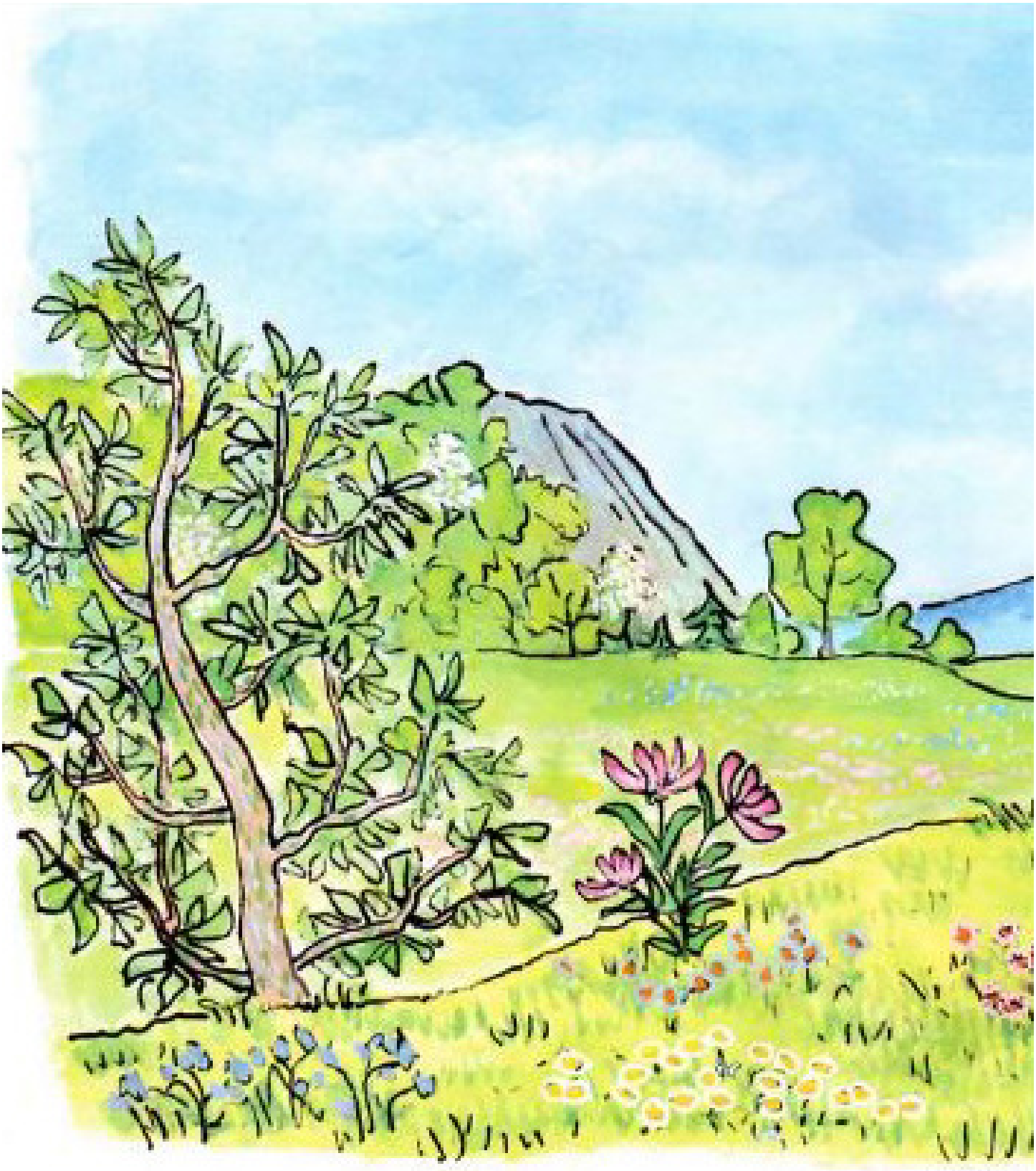

फिर जमी हुई बर्फ पिघली. वसंत का मौसम आया और ज़मीन कुछ गर्म हुई. पेड़ों में नयी कपोलें खिलने लगीं.

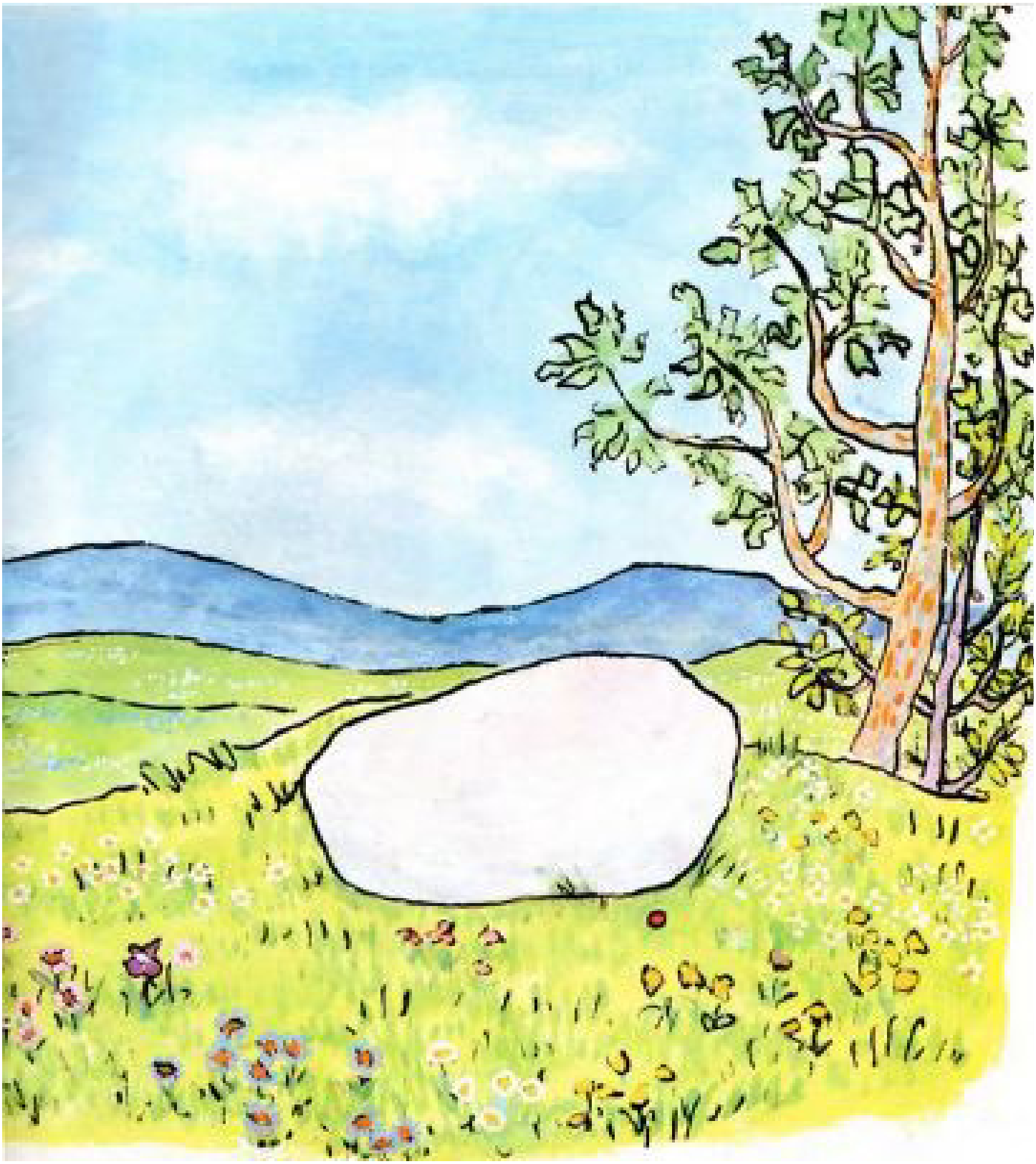

कुछ समय बाद नंगे पेड़ों पर दुबारा पत्तियां लगीं. फूलों ने भी अपना नया चेहरा दिखाया.

फिर मई में एक दिन मिस्टर डंकन ने अपनी पत्नी से पिकनिक पर चलने का आग्रह किया. “देखो, थोड़ा मन बहलेगा,” उन्होंने अपनी पत्नी से कहा. “हमें अपनी बाकी ज़िन्दगी हंसकर, ख़ुशी-ख़ुशी बितानी चाहिए. यह सच है कि हमारा लाडला, हमारी आँखों का तारा, हमारा प्यारा सिल्वेस्टर हमारे साथ नहीं है.” उसके बाद वो दोनों स्ट्रॉबेरी हिल पर पिकनिक मनाने निकले.

मिसेज़ डंकन एक चट्टान पर बैठ गयीं. माँ के बैठने की गर्मी से सिल्वेस्टर की गहरी नींद में कुछ खलल पड़ी, और वो उठकर बैठा. सिल्वेस्टर जोर से चिल्लाना चाहता था, “माँ! पिताजी! मैं सिल्वेस्टर, यहीं हूँ!” पर उसके मुंह से एक शब्द तक नहीं निकला. उसकी आवाज़ ही गायब हो गयी थी. वो पत्थर जैसा मूक बन चुका था.

कुछ देर मिस्टर डंकन इधर-उधर टहलते रहे और वहां के सुन्दर नज़ारे का जायजा लेते रहे. इस बीच में मिसेज़ डंकन ने पिकनिक का खाना - सैंडविचिज, केक, बिस्कुट आदि चट्टान पर निकाल कर रखे. तभी अचानक मिस्टर डंकन की निगाह उस लाल-सुर्ख पत्थर पर पड़ी. “गज़ब का सुन्दर पत्थर है!” उन्होंने ख़ुशी से चिल्लाते हुए कहा. “सिल्वेस्टर को यह पत्थर बेहद पसंद आता.” फिर उन्होंने उस लाल पत्थर को उठाकर चट्टान पर रखा.

फिर डंकन दंपत्ति खाने बैठे. सिल्वेस्टर अब बिलकुल चौकन्ना होकर बैठा था. मिसेज़ डंकन को भी एक रहस्यमयी उत्तेजना का एहसास हुआ.

“तुम्हें, पता है,” उन्होंने अपने पति से कहा, “मुझे कुछ ऐसा महसूस हो रहा है, कि हमारा सिल्वेस्टर अभी भी जिंदा है, और कहीं आसपास ही है.”

“यह सच है! मैं जिंदा हूँ!” सिल्वेस्टर चिल्लाना चाहता था, पर वो बिलकुल बेबस था. काश उसे पता होता कि उसकी पीठ पर रखा हुआ पत्थर वही जादुई पत्थर था!

“कितना अच्छा होता अगर इस गर्म और सुन्दर मई वाले दिन, हमारा प्यारा सिल्वेस्टर हमारे साथ होता,” मिसेज़ डंकन ने कहा. मिस्टर डंकन ने ज़मीन की तरफ दुखी आँखों से देखा. “क्या आपकी भी यह इच्छा नहीं है?” मिसेज़ डंकन ने अपने पति से पूछा.

“तुम यह सवाल मुझ से कैसे पूछ सकती हो?” मिस्टर डंकन बोले.

मिस्टर और मिसेज़ डंकन ने एक-दूसरे को बहुत दुखी निगाहों से देखा.

“काश मैं दुबारा पहले जैसा बन जाता, काश मैं फिर से गधा बन जाता!” सिल्वेस्टर ने सोचा.

और फिर झट से वो चट्टान से दुबारा गधा बन गया!

उसका बाद क्या हुआ उसका अंदाजा आप आसानी से लगा ही सकते हैं. सब एक-दूसरे के गले लगे. माँ-बाप ने अपने बेटे से तमाम सवाल पूछे. पूरे परिवार में आनंद की लहर छा गई.

कुछ देर बाद वो लोग कुछ शांत हुए और फिर घर गए. मिस्टर डंकन ने उस जादुई लाल पत्थर को एक स्टील की अलमारी में ताला लगा के रख दिया. शायद, किसी दिन वो उस जादुई पत्थर का इस्तेमाल भी करें.
पर अब तो उनके दिल की मुराद पूरी हो चुकी थी. अपने बेटे से ज्यादा बहुमूल्य चीज़, वो भला क्या मांग सकते थे? अब उनके दिल की सबसे बड़ी तमन्ना पूरी हो चुकी थी.

----अंत----